पुष्प लता शर्मा

जन्मतिथि- 08.01.1980
जन्मस्थान - प्रतापगढ़
पिता का नाम- गिरजा शंकर शर्मा
माता का नाम- राजेश्वरी शर्मा
मोबाइल नम्बर - 9555459557

अँधियारे को चीर जब, आता नवल प्रभात।
चल देती उलटे कदम , मावस वाली रात।
मावस वाली रात, छोड़ जब आँगन जाती।
तभी सुनहरी भोर , नई उम्मीद जगाती।
खिल जाते नव "पुष्प", अनेकों प्यारे प्यारे।
जले ख़ुशी के दीप , दूर जाते अँधियारे।।
****

जलता दीपक दे रहा , दुनिया को संदेश।
कर्मों से बनते सभी, मानव सुनो विशेष।
मानव सुनो विशेष , वही जग में बन पाता।
जो अपनी पहचान , काम से सुनो बनाता ।
हीरा है वह पुष्प, नहीं आँखों में खलता।
जिसने दिया प्रकाश, दीप सम हरदम जलता।।
****

नारी की महिमा अमिट , होती अपरम्पार।
काली लक्ष्मी शीतला , दुर्गा का अवतार।
दुर्गा का अवतार , जगत की है कल्याणी।
जड़ चेतन संगीत , ज्ञान दे वीणापाणी।।
सुन्दर रूप अनूप, मातु पर दुनिया वारी।
जगदम्बा का रूप, नहीं है अबला नारी।।
****

घन-घन घन-घनघन सघन, घिरी घटा घनघोर।
छम-छम छम-छम छम छमम, नाचे मनुआ मोर।
नाचे मनुआ मोर, चमक चम चमके बिजली।
छप-छप छप-छप छप्प, नाचती फिर-फिर पगली।
पुष्प पिया हैं दूर, जलाये सावन तन-मन।
बहे नैन चितचोर, सघन घन घन-घन घन-घन।।
****

अपने सारे अर्थ तज, हृदय बसा परमार्थ।
बोधिवृक्ष की खोज कर, बन जाओ सिद्धार्थ।।
बन जाओ सिद्धार्थ, भटकना मानव छोड़ो।
परम सत्य भगवान, उसी से नाता जोड़ो।
दूर करो दुख पुष्प, सजाओ जग के सपने।
ज्ञानवान गंभीर, तभी सब होंगे अपने।।
****

उड़ती नभ में लाडली, बनकर आज विहंग।
बेटों से कमतर नहीं, चलती सुत के संग।
चलती सुत के संग, मिला कंधे से कंधा।
करे जगत में नाम, तोड़कर बेड़ी फंदा।
बनीं चिकित्सक पुष्प, शिखर पर दिन-दिन चढ़ती।
कुशल शिक्षिका और, पायलट बनकर उड़ती।।
****

हिम्मत, बुद्धि विवेक से, जो करते हैं काम।
जीवन में होते सफल, पाते हैं सुखधाम।।
पाते हैं सुखधाम, हमेशा आगे बढ़ते।
समय लाख प्रतिकूल, सीढियाँ उन्नति चढ़ते।।
पुष्प नयी उम्मीद, लिए तब आये किस्मत।
सूझ ,पराक्रम धैर्य, बुद्धि यदि रखते हिम्मत।।
****

हल लेकर काँधे कृषक,चला जोतने खेत।
बीज खुशी के प्रस्फुटित, सुख का दें संकेत।।
सुख का दें संकेत, सुनहरी धरती होगी ।
स्वेद बिंदु से खेत,सींचता कर्मठ योगी ।।
पुष्प भरें खलिहान,आस सपनों को देकर ।
भूधर मन में सोच,चला घर से हल लेकर ।।
****

चहकीं उर खामोशियाँ, लिख बचपन का हाल।
हँसते गाते कूदते, शब्द भाव दे ताल।।
शब्द भाव दे ताल, बनाये छुक-छुक गाड़ी।
बैठ चले ननिहाल , लाल थे कहाँ अनाड़ी।।
मन मौजों को देख, पुष्प ! मुस्कानें महकीं।
कष्ट हुए काफूर, नानियाँ दादी चहकीं।।
****

रिश्तों के संदूक में, सिसक रही मुस्कान।
खुशी दबी कुछ मस्तियाँ, प्रेम हुआ हलकान।।
प्रेम हुआ हलकान, दर्द कब किसे दिखायें।
सन्नाटे की चीख, कहो हम किसे सुनायें।।
पुष्प धड़कने सांस, चल रही है किश्तों में।
जबसे पड़ी दरार, नेह के इन रिश्तों में।।
****